भाषा स्तुति

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनन्दनौ।
श्री नाभिनन्दन जगतवन्दन, आदिनाथ निरंजनो।।१।।

तुम आदिनाथ अनादि सेंऊं, सेय पदपूजा करूं।
कैलाश गिरि पर ऋषभ जिनवर, पदकमल हिरदैं धरूं।।२।।

तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली।
यह बिरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यों नाथ जी।।३।।

तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलच्छन चन्द्रपुरी परमेश्वरो।
महासेननन्दन, जगत वन्दन चन्द्रनाथ जिनेश्वरो।।४।।

तुम शांति पांच कल्याण पूजों, शुभमनवचकाय जू।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विधन जाय पलाय जू।।५।।

तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्य कमल विकाशनो।
श्री नेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो।।६।।

जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी।
चारित्र रथ चढ़ि भये दुलह, जाय शिवरमणी बरी।।७।।

कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननन्दन जगतवन्दन सकलसंघ मंगल कियो।।८।।

जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मान विदारकै।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के पद, मैं नमों शिरधारकै।।९।।

तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनन्दन जगतवन्दन, महावीर जिनेश्वरो।।१०।।

छत्रतीन सोहै सुरनर मोहै, वीनती अब धारिये।
कर जोड़ि सेवक बीनवै प्रभु, आवागमन निवारिये।।११।।

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहौ।
करजोड़ यो वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहौ।।१२।।

जो एक माहीं एक राजैं, एक माहिं अनेकनो।
इक अनेक की नहीं संख्या, नमूं सिद्ध निरंजनो।।१३।।

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करों मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।१४।।

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं।।१५।।

नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूं चरण तव सेव।।१६।।

जिन पूजा तै सब सुख होय, जिन पूजा सम और न कोय।
जिन पूजा तै स्वर्ग विमान, अनुक्रम तै पावे निर्वाण।।१७।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करके नमाऊं शीश, मम अपराध क्षमहु जगदीश।।१८।।

दोहा: सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लीज्यो भगवान।।१९।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान।।२०।।

जैसी महिमा तुमविषै, और धरै नहिं कोय।
जो सूरज मैं ज्योति हैं, नहिं तारागण सोय।।२१।।

नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिनमाहिं पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाश तैं, अन्धकार विनशाय।।२२।।

बहुत प्रशंसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखि भगवान।।२३।।

इति भाषास्तुति